बजरंग बाण

हिंदी अर्थ के साथ

।। दोहा ।।

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करें सन्मान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ।।

भावार्थः-

जो भी व्यक्ति पूर्ण प्रेम विश्वास के
साथ विनय पूर्वक अपनी आशा रखता है,
रामभक्त हनुमान जी की
कृपा से उसके सभी
कार्य शुभदायक और सफल होते हैं ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

जय हनुमन्त सन्त हितकारी ।
सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ।। 1 ।।

भावार्थः-

हे भक्त वत्सल हनुमान जी
आप संतों के हितकारी हैं,
कृपा पूर्वक
मेरी विनती भी सुन लीजिये ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

जन के काज विलम्ब न कीजै ।
आतुर दौरि महा सुख दीजै ।। 2 ।।

भावार्थ:-

हे प्रभु पवनपुत्र
आपका दास अति संकट में है ,
अब बिलम्ब मत कीजिये
एवं पवन गति से आकर
भक्त को सुखी कीजिये ।।

बजरंग बाण

।। मेरे राम ।।
mereramapp

।। चौपाई ।।

जैसे कूदि सुन्धु के पारा ।
सुरसा बदन पैठि विस्तारा ।। 3 ।।

भावार्थः-

जिस प्रकार से आपने खेल-खेल में
समुद्र को पार कर लिया था
और सुरसा जैसी प्रबल और छली के मुंह में
प्रवेश करके वापस भी लौट आये ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

आगे जाई लंकिनी रोका ।
मारेहु लात गई सुर लोका ।।4।।

भावार्थः-

जब आप लंका पहुंचे और
वहां आपको वहां की प्रहरी लंकिनी ने
रोका तो आपने एक ही प्रहार में
उसे देवलोक भेज दिया ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।।चौपाई।।

जाय विभीषण को सुख दीन्हा ।
सीता निरखि परम पद लीन्हा ।।5।।

भावार्थः-

राम भक्त विभीषण को जिस प्रकार
अपने सुख प्रदान किया ,
और माता सीता के कृपापात्र बनकर
वह परम पद प्राप्त किया
जो अत्यंत ही दुर्लभ है ।।

।।मेरे राम।।
mereramapp

।। चौपाई ।।

बाग़ उजारि सिन्धु महं बोरा ।
अति आतुर जमकातर तोरा ।। 6 ।।

भावार्थः-

कौतुक-कौतुक में आपने सारे बाग़ को ही उखाड़कर समुद्र में डुबो दिया एवं बाग़ रक्षकों को जिसको जैसा दंड उचित था वैसा दंड दिया ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

अक्षय कुमार मारि संहारा ।
लूम लपेट लंक को जारा ।। 7 ।।

भावार्थः-

बिना किसी श्रम के क्षण मात्र में
जिस प्रकार आपने दशकंधर पुत्र अक्षय कुमार का
संहार कर दिया
एवं अपनी पूछ से सम्पूर्ण
लंका नगरी को जला डाला ।।

बजरंग बाण

।। मेरे राम ।।
mereramapp

।। चौपाई ।।

लाह समान लंक जरि गई ।
जय जय धुनि सुरपुर में भई ।।8।।

भावार्थः-

किसी घास-फूस के छप्पर की तरह सम्पूर्ण लंका नगरी जल गयी आपका ऐसा कृत्य देखकर हर जगह आपकी जय जयकार हुयी ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

अब विलम्ब केहि कारण स्वामी ।
कृपा करहु उन अन्तर्यामी ।।9।।

भावार्थः-

हे प्रभु तो फिर अब मुझ दास के
कार्य में इतना बिलम्ब क्यों ?
कृपा पूर्वक मेरे कष्टों का हरण करो
क्योंकि आप तो सर्वज्ञ और
सबके हृदय की बात जानते हैं ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता।
आतुर होय दुख हरहु निपाता।। 10 ।।

भावार्थः-

हे दीनों के उद्धारक आपकी कृपा से ही
लक्ष्मण जी के प्राण बचे थे ,
जिस प्रकार आपने उनके प्राण बचाये थे
उसी प्रकार इस दीन के
दुखों का निवारण भी करो ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

जै गिरिधर जै जै सुखसागर।
सुर समूह समरथ भटनागर ।। 11 ।।

भावार्थः-

हे योद्धाओं के नायक
एवं सब प्रकार से समर्थ,
पर्वत को धारण करने वाले एवं
सुखों के सागर मुझ पर कृपा करो ।।

बजरंग बाण

मेरे राम
mereramapp

।। चौपाई ।।

ॐ हनु हनु हनुमंत हठीले।
बैरिहिं मारु बज्र की कीले।। 12 ।।

भावार्थः-

हे हनुमंत – हे दुःख भंजन – हे हठीले हनुमंत
मुझ पर कृपा करो और मेरे शत्रुओं को
अपने वज्र से मारकर
निस्तेज और निष्प्राण कर दो ।।

।। चौपाई ।।

गदा बज्र लै बैरिहिं मारो।
महाराज प्रभु दास उबारो।। 13 ।।

भावार्थः-

हे प्रभु गदा और वज्र लेकर
मेरे शत्रुओं का संहार करो
और अपने इस दास को
विपत्तियों से उबार लो ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

ॐकार हुंकार प्रभु धावो।
बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो।। 14।।

भावार्थः-

हे प्रतिपालक मेरी करुण पुकार
सुनकर हुंकार करके मेरी विपत्तियों
और शत्रुओं को निस्तेज करते हुए
मेरी रक्षा हेतु आओ , शीघ्र अपने अस्त्र-शस्त्र
से शत्रुओं का निस्तारण कर
मेरी रक्षा करो ।।

mereramapp

।। चौपाई ।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा ।
ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा ।। 15 ।।

भावार्थः-

हे ह्रीं ह्रीं ह्रीं रूपी शक्तिशाली कपीश
आप शक्ति को अत्यंत प्रिय हो और
सदा उनके साथ उनकी सेवा में रहते हो ,
हुं हुं हुंकार रूपी प्रभु मेरे शत्रुओं के
हृदय और मस्तक विदीर्ण कर दो ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

सत्य होहु हरि शपथ पाय के।
रामदूत धरु मारु जाय के।। 16 ।।

भावार्थ:-

हे दीनानाथ आपको श्री हरि की शपथ है
मेरी विनती को पूर्ण करो –
हे रामदूत मेरे शत्रुओं का और
मेरी बाधाओं का विलय कर दो ।।

बजरंग बाण

।। मेरे राम ।।
mereramapp

।। चौपाई ।।

जय जय जय हनुमन्त अगाधा ।
दुःख पावत जन केहि अपराधा ।। 17 ।।

भावार्थः-

हे अगाध शक्तियों और कृपा के स्वामी
आपकी सदा ही जय हो ,
आपके इस दास को किस
अपराध का दंड मिल रहा है ?

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

पूजा जप तप नेम अचारा ।
नहिं जानत हौं दास तुम्हारा ।। 18 ।।

भावार्थः-

हे कृपा निधान आपका यह दास पूजा की विधि ,
जप का नियम , तपस्या की प्रक्रिया तथा
आचार-विचार सम्बन्धी कोई भी ज्ञान नहीं रखता
मुझ अज्ञानी दास का उद्धार करो ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई।।

वन उपवन, मग गिरिगृह माहीं ।
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ।। 19।।

भावार्थ:-

आपकी कृपा का ही प्रभाव है कि
जो आपकी शरण में है वह कभी भी
किसी भी प्रकार के भय से भयभीत नहीं होता
चाहे वह स्थल कोई जंगल हो अथवा
सुन्दर उपवन चाहे घर हो अथवा कोई पर्वत ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

पांय परों कर ज़ोरि मनावौं ।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ।। 20 ।।

भावार्थ:-

हे प्रभु यह दास आपके चरणों में पड़ा हुआ हुआ है ,
हाथ जोड़कर आपके अपनी विपत्ति कह रहा हूँ ,
और इस ब्रह्माण्ड में भला कौन है
जिससे अपनी विपत्ति का हाल कह
रक्षा की गुहार लगाऊं ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

जय अंजनिकुमार बलवन्ता।
शंकरसुवन वीर हनुमन्ता।। 21 ।।

भावार्थः-

हे अंजनी पुत्र
हे अतुलित बल के स्वामी ,
हे शिव के अंश वीरों के वीर हनुमान जी
मेरी रक्षा करो ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

बदन कराल काल कुल घालक।
राम सहाय सदा प्रतिपालक।। 22 ।।

भावार्थः-

हे प्रभु आपका शरीर अति विशाल है और
आप साक्षात काल का भी
नाश करने में समर्थ हैं ,
हे राम भक्त , राम के प्रिय आप सदा ही
दीनों का पालन करने वाले हैं ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

भूत प्रेत पिशाच निशाचर ।
अग्नि बेताल काल मारी मर ।। 23 ।।

भावार्थः-

चाहे वह भूत हो अथवा प्रेत हो भले
ही वह पिशाच या निशाचर हो या
अगिया बेताल हो या
फिर अन्य कोई भी हो ।।

बजरंग बाण

मेरे राम
mereramapp

।। चौपाई ।।

इन्हें मारु तोहिं शपथ राम की ।
राखु नाथ मरजाद नाम की ।।24 ।।

भावार्थः-

हे प्रभु आपको आपके
इष्ट भगवान राम की सौगंध है
अविलम्ब ही इन सबका संहार कर दो
और भक्त प्रतिपालक एवं राम-भक्त नाम की
मर्यादा की आन रख लो ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

जनकसुता हरिदास कहावौ।
ताकी शपथ विलम्ब न लावो।। 25 ।।

भावार्थः-

हे जानकी एवं जानकी बल्लभ के परम प्रिय
आप उनके ही दास कहाते हो ना ,
अब आपको उनकी ही सौगंध है
इस दास की विपत्ति निवारण में
विलम्ब मत कीजिये ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

जय जय जय धुनि होत अकाशा ।
सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा ।। 26 ।।

भावार्थः-

आपकी जय-जयकार की ध्वनि सदा ही
आकाश में होती रहती है और
आपका सुमिरन करते ही दारुण दुखों का भी
नाश हो जाता है ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

चरण पकर कर ज़ोरि मनावौ ।
यहि अवसर अब केहि गौहरावौं ।। 27 ।।

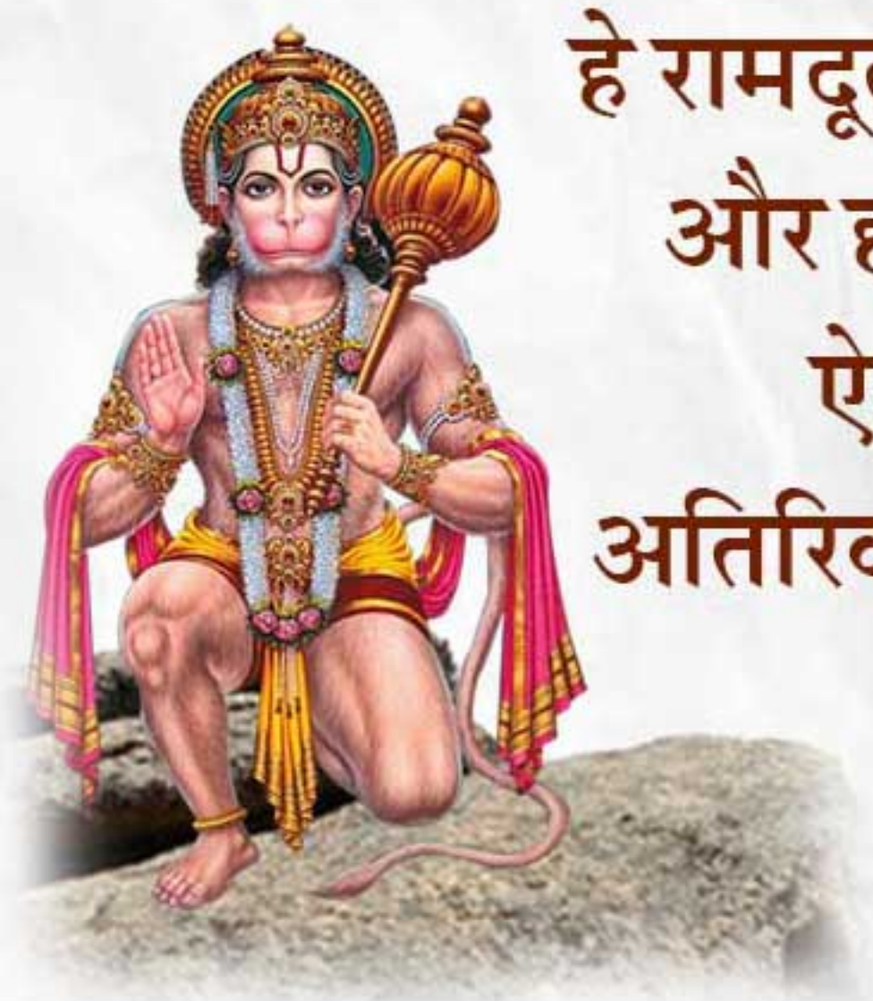

भावार्थः-

हे रामदूत अब मैं आपके चरणों की शरण में हूँ
और हाथ जोड़ कर आपको मना रहा हूँ –
ऐसे विपत्ति के अवसर पर आपके
अतिरिक्त किससे अपना दुःख बखान करूँ ।।

बजरंग बाण

।। चौपाई ।।

उठु उठु चलु तोहि राम दुहाई।
पांय परौं कर ज़ोरि मनाई।। 28 ।।

भावार्थः-

हे करूणानिधि अब उठो और
आपको भगवान राम की सौगंध है
मैं आपसे हाथ जोड़कर एवं
आपके चरणों में गिरकर अपनी
विपत्ति नाश की प्रार्थना कर रहा हूँ ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

ॐ चं चं चं चं चपत चलंता।
ऊ हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता।।29।।

भावार्थः-

हे चं वर्ण रूपी तीव्रातितीव्र वेग (वायु वेगी) से
चलने वाले,
हे हनुमंत लला
मेरी विपत्तियों का नाश करो ।।

मेरे राम
mereramapp

।। चौपाई ।।

ॐ हँ हँ हांक देत कपि चंचल।
ॐ सं सं सहमि पराने खल दल ।। 30 ।।

भावार्थ:-

हे हं वर्ण रूपी आपकी हाँक से ही
समस्त दुष्ट जन ऐसे निस्तेज हो जाते हैं
जैसे सूर्योदय के समय
अंधकार सहम जाता है ।।

बजरंग बाण

।। मेरे राम ।।
mereramapp

।। चौपाई ।।

अपने जन को तुरत उबारो ।
सुमिरत होय आनन्द हमारो ।। 31 ।।

भावार्थः-

हे प्रभु आप ऐसे आनंद के सागर हैं कि
आपका सुमिरण करते ही दास जन
आनंदित हो उठते हैं
अब अपने दास को विपत्तियों से
शीघ्र ही उबार लो ।।

बजरंग बाण

mereramapp

।। चौपाई ।।

यह बजरंग बाण जेहि मारै ।
ताहि कहो फिर कौन उबारै ।। 32 ।।

भावार्थः-

यह बजरंग बाण यदि किसी को
मार दिया जाए तो फिर भला
इस अखिल ब्रह्माण्ड में
उबारने वाला कौन है ?

बजरंग बाण

।। मेरे राम ।।

mereramapp

।। चौपाई ।।

पाठ करै बजरंग बाण की।
हनुमत रक्षा करै प्राण की।। 33 ।।

भावार्थः-

जो भी पूर्ण श्रद्धा युक्त होकर नियमित इस बजरंग बाण का पाठ करता है , श्री हनुमंत लला स्वयं उसके प्राणों की रक्षा में तत्पर रहते हैं ।।

mereramapp

।। चौपाई ।।

यह बजरंग बाण जो जापै ।
ताते भूत प्रेत सब कांपै ।। 34 ।।

भावार्थः-

जो भी व्यक्ति नियमित
इस बजरंग बाण का जप करता है ,
उस व्यक्ति की छाया से भी बहुत-
प्रेतादि कोसों दूर रहते हैं ।।

mereramapp

।। चौपाई ।।

धूप देय अरु जपै हमेशा ।
ताके तन नहिं रहै कलेशा ।। 35 ।।

भावार्थः-

जो भी व्यक्ति धुप-दीप देकर
श्रद्धा पूर्वक पूर्ण समर्पण से
बजरंग बाण का पाठ करता है
उसके शरीर पर कभी कोई
व्याधि नहीं व्यापती है ।।

mereramapp

।। दोहा ।।

उर प्रतीति दृढ सरन हवै,पाठ करै धरि ध्यान।
बाधा सब हर करै,सब काज सफल हनुमान।
प्रेम प्रतीतिहि कपि भजे,सदा धरै उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल सुभ,सिद्ध करैं हनुमान।।

भावार्थः-

प्रेम पूर्वक एवं विश्वासपूर्वक जो कपिवर
श्री हनुमान जी का स्मरण करता हैं
एवं सदा उनका ध्यान अपने हृदय में करता है
उसके सभी प्रकार के कार्य हनुमान जी की
कृपा से सिद्ध होते हैं ।।

बजरंग बाण

mereramapp

Mere Ram- मेरे राम

SCAN AND GET IT ON
Google Play